पुरा शक्रमुपस्थाय तवोर्वीं प्रतियास्यतः ।

आसीत्कल्पतरुच्छायामाश्रिता सुरभिः पथि ।।75।।

अन्वय पुरा शक्रम् उपस्थाय उर्वीं प्रति यास्यतः तव पथि कल्पतरुच्छायाम् आश्रिता सुरभिः आसीत्।

अनुवाद हे राजन् ! एक बार पूर्वकाल में जब आप इन्द्र की सेवा करके पृथ्वी की ओर लौट रहे थे तब मार्ग में कल्पवृक्ष की छाया में कामधेनु बैठी हुई थी।

टिप्पणियाँ

उपस्थाय उप धातु स्था ल्यप्, सेवा करने के अनन्तर, पश्चात्।

(प्रति) यास्यतः (प्रति) धातु या लृट् शतृ, षष्ठी विभक्ति, एकवचन। जब आप लौट रहे थे। अर्थात् इन्द्र की सेवा करके जब आप (महाराज दिलीप) पृथ्वी की ओर लौट रहे थे।

शक्रः इन्द्र।

सुरभिः कामधेनु, देवताओं की गौ जो कामनाओं को पूर्ण करती है।

कल्पतरुच्छायाम् कल्पस्य तरुः इति कल्पतरुः, कल्पतरोः छायाम् (षष्ठी तत्पुरुष) कल्पतरुच्छायाम्।

कल्पतरु अथवा कल्पवृक्ष की छाया में। कल्पवृक्ष मनोकामना पूर्ण करने में समर्थ है। कल्प का अर्थ है 'संकल्पित अर्थ' अर्थात् वांछित अर्थ। कल्पतरु के पश्चात् 'द्वेच' इस सूत्र से 'तुक् (च)' आगम होकर 'कल्पतरुच्छायाम्' बनता है।